ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

मध्य अलकनन्दा बेसिन में पर्यावरण का बदलता स्वरूप

Changing Nature of Environment In Central Alaknanda Basin

Paper Submission: 15/06/2021, Date of Acceptance:24/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

किरन त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
प० ल० मो० शर्मा० रा० स्ना० महाविद्यालय,
ऋषिकेश, देहरादून,
उत्तराखंड, भारत

मंजू भंडारी
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
चिन्यालीसौड़, उत्तरकाशी,
उत्तराखंड, भारत

सारांश

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जो प्राकृतिक एवं मानवीय भूदृश्यों में निरन्तर चलता रहता हैं, प्राकृतिक तत्वों में यह परिवर्तन लम्बे समय में धीमीगति से होता रहता है परन्तु मानवीय हस्तक्षेप के कारण इस परिवर्तन में तीव्रता आ जाती हैं तथा कभी–कभी यह विनाश का रूप भी धारण कर लेती है। मानवीय तत्वों में परिवर्तन बड़ी तीव्र गति से होता है। जिसके कारण खाली भूमि बहुत कम समय मे नगरों में परिवर्तित हो जाती है। या कभी–कभी पलायन के प्रभाव में बड़ी वस्ती व उत्पादित कृषि भूमि बहुत कम समय में वंजर अवस्था में पहुँच जाती हैं, इस प्रकार का परिवर्तन उत्तराखण्ड के पर्वतीय पर्यावरण में भी दृ ष्टिगोचर होता है ।

Change is the law of life. Which continues in natural and human landscapes, this change in natural elements keeps happening at a slow pace in a long time, but due to human intervention, this change intensifies and sometimes it also takes the form of destruction. Changes in human elements take place at a very rapid rate. Due to which vacant land gets converted into cities in a very short time. Or sometimes, under the influence of migration, large settled and produced agricultural land reaches a barren stage in a very short time, this type of change is also visible in the mountainous environment of Uttarakhand.

मुख्य शब्द : परिवर्तन, आर्थिक विकास, पर्यावरण, पर्वतीय क्षेत्र, प्रवासदिनप्रतिदिन, पलायन, प्रभाव, प्रतिशत वृद्धि, प्रजातियाँ, प्राकृतिक वातावरण, दृष्टिगोचर।
Change, Economic Development, Environment, Mountain Area, Migration Day By Day, Migration, Effect, Percentage Increase, Species, Natural Environment, Visible.

प्रस्तावना

हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरण का स्वरूप दिन प्रतिदिन बदलता दिखाई दे रहा है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण पर्वतीय क्षेत्रों से जनसंख्या का बड़ी संख्या में मैदान की ओर पलायन है। जिससे वर्तमान समय में अधिकांश क्षेत्र जनविहीन हो चुके हैं उत्तराखण्ड हिमालय के पर्यावरण में 1970 के दशक से 2020 तक पर्याप्त परिवर्तन दिखाई देता है, छठे दशक तक उत्तराखण्ड का जन जीवन यहाँ पर प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर था, शिक्षा तथा आर्थिक विकास के अभाव में यहाँ की जनसंख्या द्वारा भूमि व वन संसाधनों का अंधा बुन्ध शोषण किया गया । धीरे–धीरे जनसंख्या का भार अधिक होने के कारण संसाधनों में कमी अनुभव हुई तथा रोजगार के लिए प्रवास शुरू हुआ और जनसंख्या का भार अधिक होने के कारण संसाधनों में कमी अनुभव हुई कि यह उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों की मुख्य समस्या बन गयी है, वर्तमान समय में पर्वतीय क्षेत्र के काफी गाँव खाली हो चुके हैं या खाली होने की कगार पर हैं। यह समस्या उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों के लगभग सभी गाँवों में देखने मिलती हैं परन्तु इसका अधिकांश प्रभाव यात्रा मार्गो से दूर स्थित गांवो पर अधिक दिखायी देता है। जो गांव यात्रा मार्गों में स्थित हैं वे आज भी आवाद स्थिति में हैं इसके अतरिक्त वे गाँव भी अधिक प्रभावित हैं जहाँ पण्डित लोग बसे हैं। जिसका मुख्य कारण रोजगार व पण्डिताई कार्यो हेतु लोगों का पंजाब हिमाचल व दिल्ली आदि क्षेत्रों में प्रवास करना है। राजपूतों के गाँवों की स्थिति आज भी कुछ हद तक ठीक है कृषिभूमि में भी परिवर्तन का मुख्य कारण गाँवों में रोजगार योजनाओं का संचालन होना है। क्यों कि इन योजनाओं से स्थानीय